

# ZÚMEसत्र 9 का वीडियो स्क्रिप्टस्

## क्रमबद्धताहीन

इस सत्र में, हम सीखेंगे कि राज्य को बढ़ाने के लिए एक रेखीय तरीके से सोचने की आदत को कैसे तोड़ना है। ऐसे शिष्य बनाने के लिए जो तेजी से शिष्य बनाते हैं, हमें ध्यान रखने की जरूरत है कि एक ही समय में बहुत सी चीजें हो सकती हैं और जरूरी नहीं है कि वे एक क्रम में हों।

हमें बिना क्रम की वृद्धि की सामर्थ्य को सीखना पड़ेगा। जब लोग चेलों की बढ़ोत्तरी के बारे में सोचते हैं, तो वे अक्सर इसे एक के बाद एक होनेवाली प्रक्रिया समझते हैं।

पहले प्रार्थना। फिर तैयारी। फिर परमेश्वर का सुसमाचार बताना। फिर चेलों को बढ़ाना। फिर चर्च को बढ़ाना। फिर लीडर्स को विकसित करना। फिर पुनः उत्पादन।

जब हम इस तरह से सीखते हैं, तब राज्य में बढ़ोत्तरी आसान, रेखीय और क्रमानुसार प्रक्रिया लगती है। परेशानी यह है कि यह हमेशा इस तरह से काम नहीं करता है। बड़ी परेशानी यह है कि यह हमेशा इस तरह से सर्वश्रेष्ठ रीति से काम नहीं करता है।

यह रेखा एक व्यक्ति के जीवन को दर्शाती है। यहाँ जन्म है। यहाँ वे पहली बार परमेश्वर का सुसमाचार सुनते हैं। यहाँ वे यीशु का शिष्य बनने का निर्णय लेते हैं। यहाँ वे अपनी कहानी को और परमेश्वर की कहानी को बताते हैं और बढ़ने लगते हैं। और यहीं जीवन का अंत है।

तो यहाँ से यहाँ तक – पहली बार यीशु के बारे में सुनने से लेकर यीशु के बारे में बताने तक, इसे हम एक आत्मिक पीढ़ी कहते हैं।

बढ़ने से पहले का समय। परमेश्वर के परिवार के बढ़ने से पहले का समय। सामान्यतः शिष्यों को इसी तरह से सिखाया जाता है। लेकिन जब हम सबसे महान आशीष जैसे नमूने का इस्तेमाल करते हैं तो देखिये क्या होता है।

अब एक नया शिष्य तुरंत बढ़ने लगता है। आत्मिक पीढ़ी संक्षिप्त हो जाती है। कोई परमेश्वर के सुसमाचार को जल्दी सुनता है। परमेश्वर का परिवार तेजी से बढ़ता है। बहुत से लोग अनंत काल के लिए बच जाते हैं।

और यह सब केवल आगे बढ़ने के द्वारा होता है जब वे बढ़ते हैं। लेकिन तब क्या जब हम लगातार आगे बढ़ते रहें? तब क्या जब कोई आरंभ में ही बढ़ने लगे? तब क्या जब वे पहली बार विश्वास करने के बजाय पहली बार सुनने के बाद ही प्रचार करने लगे?

कुछ लोग यीशु को "हाँ कहने से पहले ही एक समूह को इकट्ठा करने और परमेश्वर के वचन से जो सीखते हैं उसे दोस्तों और परिवार को बताने के लिए तैयार रहते हैं। यदि हम उन लोगों को दिखाएं कि एक समूह को कैसे इकट्ठा करना है और जो सीखा है उसे करने के लिए कैसे बताना है और सिखाना है तो परमेश्वर का परिवार और भी तेजी से बढ़ेगा। अब शिष्य बनना यीशु तक पहुँचने का एक मार्ग है ना कि उद्धार के बाद का जो हम प्रचार करते हैं।

इस तरह से एक परिवार या मित्र या एक गाँव यीशु के शिष्य बन सकते हैं। लेकिन तब क्या जब कोई इससे भी तेजी से बढ़ सकता है? तब क्या जब कोई परमेश्वर के पुत्र से मिलने से पहले ही परमेश्वर के तरीकों को बताने लगे?

कभी कभी एक समूह शायद तुरंत परमेश्वर के सुसमाचार को सुनने में असक्षम हो या तैयार न हो। लेकिन फिर

भी यह समूह परमेश्वर के नमूने को सीख सकता है –समुदाय के विकास या लीडरशिप प्रशिक्षण जैसे प्रयासों के द्वारा। यह समूह परमेश्वर के नमूने को बढ़ाना शुरू कर सकता है –सीखते हुए –आज्ञा मानते हुए –बाँटते हुए – और यीशु के बारे में सुनने से पहले ही दूसरों को भी यही करना सीखाते हुए।

जब ऐसा होता है, तब परमेश्वर के तरीके इच्छुक के हृदय पर छप जाते हैं। उनके नमूने एक समुदाय और व्यक्ति के जीवन में बुन दिए जाते हैं। परमेश्वर का मार्ग तैयार हो जाने के बाद –परमेश्वर का सुसमाचार उस सच्चाई को प्रगट कर सकता है जिसे वे ग्रहण कर रहे थे। इस तरह से एक संस्था, एक समुदाय, या एक देश यीशु का शिष्य बन सकता है।

बिना क्रम की वृद्धि में इस सोच की आवश्यकता है कि "क्या महत्वपूर्ण है?" प्रक्रिया चाहें जो भी हो –बड़ा प्रश्न हमेशा वही रहेगा –अच्छी भूमि कौन है जो विश्वासयोग्य ठहरेगा? कौन परमेश्वर के तरीकों को सीखेगा और अभ्यास करेगा और दूसरों को बताएगा?

अच्छी भूमि को खोलना –यानि अच्छे हृदयों को खोजना –हमारे सारे समय और ऊर्जा और प्रयास के योग्य हैं। इनके लिए हम अपने हृदय को ऊँडेलते हैं। इनके लिए हम अपना जीवन ऊँडेलते हैं। ये लोग सर्वश्रेष्ठ रीति से परमेश्वर के राज्य को बढ़ाते हैं।